विद्या - भवन बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग - द्वितीय विषय - हिंदी

एन.सी.ई.आर.टी पर आधारित

दिनांक - 11 - 09- 2021

राखी का त्योहार

सुप्रभात बच्चों ,

आज की कक्षा में आपको राखी का त्योहार कहानी के बारे में अध्ययन करना है, जो इस प्रकार है।

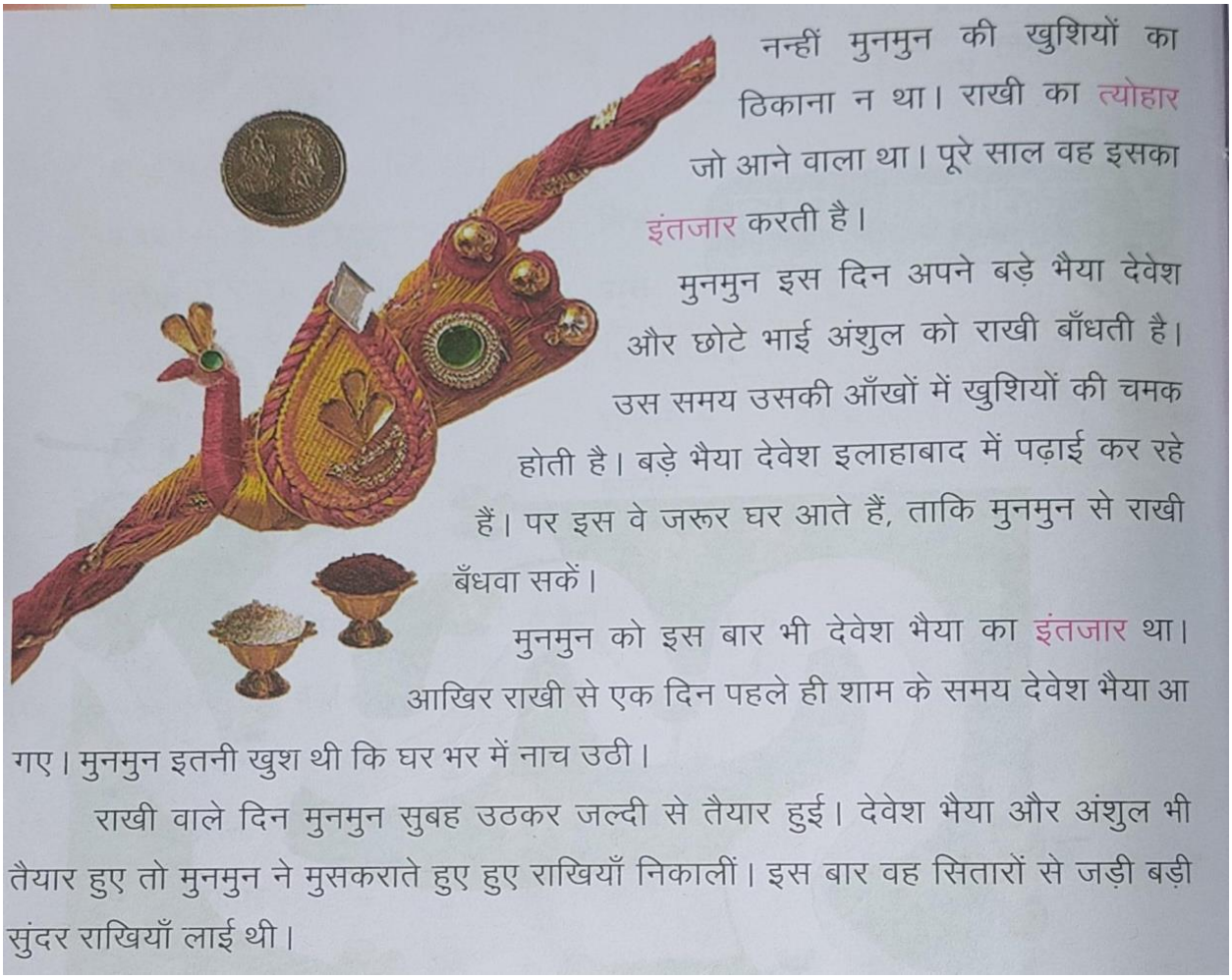

नन्हीं मुनमुन की खुशियों का ठिकाना न था। राखी का त्योहार जो आने वाला था। पूरे साल वह इसका इंतजार करती है।

मुनमुन इस दिन अपने बड़े भैया देवेश और छोटे भाई अंशुल को राखी बाँधती है। उस समय उसकी आँखों में खुशियों की चमक होती है। बड़े भैया देवेश इलाहाबाद में पढ़ाई कर रहे हैं। पर इस वे जरूर घर आते हैं, ताकि मुनमुन से राखी बँधवा सकें।

मुनमुन को इस बार भी देवेश भैया का इंतजार था। आखिर राखी से एक दिन पहले ही शाम के समय देवेश भैया आ गए। मुनमुन इतनी खुश थी कि घर भर में नाच उठी।

राखी वाले दिन मुनमुन सुबह उठकर जल्दी से तैयार हुई। देवेश भैया और अंशुल भी तैयार हुए तो मुनमुन ने मुसकराते हुए हुए राखियाँ निकालीं। इस बार वह सितारों से जड़ी बड़ी सुंदर राखियाँ लाई थी।

पहले उसने देवेश भैया को तिलक लगाया और कलाई पर राखी बाँध दी। फिर बरफी की प्लेट उठाकर कहा, "अब मुँह मीठा कीजिए भैया।"

देवेश भैया ने मुनमुन के हाथ से बरफी खाई। फिर प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरकर कहा, "हमेशा खुश रहे मेरी बहना!"

अब मुनमुन ने अंशुल को तिलक लगाकर राखी बाँधी। जब वह उसे बरफी खिला रही थी तो अंशुल इठलाकर बोला, "मैं तो एक नहीं, दो लूँगा।"

यह सुनकर मुनमुन और देवेश भैया की हँसी छूट गई।

देवेश भैया ने मुनमुन को कहानियों की एक रंग–बिरंगी किताब उपहार में दी। अंशुल ने मुनमुन को एक अच्छी–सी पेंसिल दी। उसकी मम्मी ने उसे बताया कि राखी को ही रक्षाबंधन का त्योहार भी कहते हैं। इस दिन बहनें भाइयों की कलाई पर राखी बाँधकर उनके मंगल का कामना करती हैं। और भाई जीवन भर बहन की रक्ष्ज्ञा करने का वचन देते हैं। लंबे समय से यह त्योहार मनाया जा रहा है।

मुनमुन मन ही मन बोली, "कितना प्यारा है, भाई–बहन के प्यार का यह अनोखा त्योहार!"

शब्दार्थ

इंतजार – प्रतीक्षा

इठलाकर - नखरे दिखा कर।

कामना – शुभ – शुभ

त्योहार – पर्व

मंगल – कल्याण, शुभ

अनोखा – अद्भुत

गृहकार्य

दिए, गए अध्ययन सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें-

****

ज्योति